एक नोट में क्या-क्या देखा?

रेक्स डी रोज़ारियो

"ये आइस्क्रीम कित्ते की है?" "कैंडी पाँच की, कप दस का।" अब तुम्हें तय करना है - पाँच रुपए दोगे तो उतनी कीमत वाली आइसक्रीम मिलेगी और दस दोगे तो उतनी कीमत का कप मिलेगा। तुम्हारी गुल्लक में कितना पैसा है? कहाँ-कहाँ से इकट्ठा किया? राखी, जन्मदिन में मिला या ईदी मिली। इस बार "हाथ के मैल" यानी पैसे पर नज़रें गड़ाकर देखते हैं।

पैसा ये कैसा

पैसा देकर चीज़ लेना तो तभी हो सका जब पैसा बना। जब पैसा नहीं था तब लोग किसी एक चीज़ को देकर कोई दूसरी चीज़ ले लेते थे। जैसे अपने दोस्त को दस कँचे दो और उससे अपने पसन्दीदा हीरो की पाँच तस्वीरें ले लो। लेकिन चीज़ों का ऐसा लेन-देन आसान नहीं था। खासतौर पर तब जब चीज़ें बड़ी हों। सौदों को आसान बनाने के लिए ही पैसे का आविष्कार हुआ।

यानी, पैसा एक माध्यम है जो लेन-देन, खरीद-फरोख्त को आसान कर देता है। पैसे का मूल्य लोग तय करते हैं, और बाज़ार भी। पैसे का अपना कोई मूल्य नहीं होता है।

वस्तुओं का मूल्य भी बाज़ार ही तय करता है। किसी वस्तु का मूल्य कई बातों पर निर्भर करता है। जैसे, वस्तु बनाने में कितना कच्चा माल लगा, कितनी मेहनत लगी, बाज़ार में उस वस्तु को खरीदने वालों की संख्या कितनी है आदि।

पुराने ज़माने में सिक्के अलग-अलग चीज़ों के बने होते थे। जैसे, नमक या चाँदी-सोना, जो मूल्यवान हो। हाँ, एक ज़माने में नमक बहुत कीमती माना जाता था।

नोटों पर भाषा

1953 में पहली बार नोटों में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया। आज, हिन्दी व अँग्रेज़ी के अलावा नोटों पर रुपए का मूल्य 15 भारतीय भाषाओं में लिखा होता है।

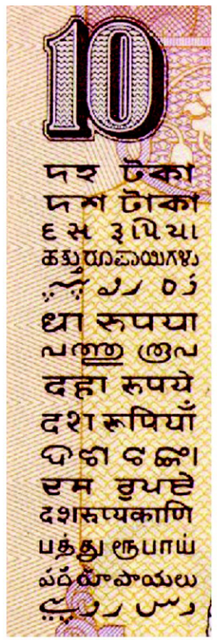

असमिया
बांग्ला
गुजराती
कन्नड़
कश्मीरी
कोंकणी
मलयालम
मराठी
नेपाली
उड़िया
पंजाबी
संस्कृत
तमिल
तेलुगु
उर्दू

मेरा पन्ना

तरुण-बबलेश, होशंगाबाद, म.प्र.

आजकल कागज़ के नोट छपते हैं और ताँबे, काँसे या स्टील के सिक्के बनते हैं। देश के राष्ट्रीय बैंक और सरकार मिलकर इन सिक्कों का मूल्य तय करते हैं।

भारत का अधिकृत राष्ट्रीय बैंक रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया है। रिज़र्व बैंक यह भी तय करता है कि साल में कितने नोट छपना है।

आजकल के नोट और सिक्के

भारत के नोटों को रुपया कहते हैं और सिक्कों को पैसा। एक रुपया 100 पैसे के बराबर है। हमारे देश में 1000, 500, 100, 50, 20, 10 और 5 रुपए के नोट छपते हैं। पहले 1 और 2 रुपए के भी नोट छपते थे पर आजकल इनकी छपाई बन्द हो गई है। 5, 2 और 1 रुपए के नोट भी हैं और सिक्के भी। इनके अलावा 50, 25, 20 और 10 पैसे के भी सिक्के हैं।

कौन बनाता है नोट?

सरकार और रिज़र्व बैंक नोट व सिक्कों का डिज़ाइन तय करते हैं। हाँ, डिज़ाइन में ही कहीं डिज़ाइनर अपने हस्ताक्षर भी कर देता है। जिसे ढूँढना बड़ा मुश्किल काम है। डिज़ाइन यानी नोट, सिक्के में क्या-क्या होगा, क्यों होगा, इसमें कब क्या बदलाव किए जाएँगे आदि। जैसे पहले चौकोर सिक्के भी बनते थे (मसलन पाँच पैसे का सिक्का) पर आजकल सभी सिक्के गोल ही होते हैं।

आगे बढ़ने से पहले आजकल के कुछ सिक्के देखते चलते हैं

मूल्यः 1 रुपए
धातुः स्टेनलेस स्टील
वजनः 4.85 ग्राम
व्यासः 25 मि.मी.

मूल्यः 2 रुपए
धातुः काँसा/निकल
वजनः 6 ग्राम
व्यासः 26 मि.मी.

मूल्यः 5 रुपए
व्यासः 23 मि.मी.
धातुः काँसा/निकल
वजनः 9 ग्राम

मूल्यः 50 पैसे
धातुः स्टेनलेस स्टील
वजनः 3.79 ग्राम
व्यासः 16 मि.मी.

मूल्यः 25 पैसे
धातुः स्टेनलेस स्टील
वजनः 2 ग्राम
व्यासः 22 मि.मी.

मूल्यः 10 पैसे
धातुः स्टेनलेस स्टील
वजनः 2 ग्राम
व्यासः 16 मि.मी.

दिन में जाने कितनी बार हम नोट को छूते होंगे, उन्हें देखते होंगे, उसको लेते-देते होंगे। पर कभी गौर किया है कितना कुछ होता है इन नोटों में। नहीं किया तो अब करते हैं। शुरुआत आजकल के नोटों से...

आजकल छप रहे सभी नोटों में महात्मा गाँधी की तस्वीर ज़रूर होती है। महात्मा गाँधी वाली सीरीज़ 1996 में शुरू हुई थी। इसमें कई ऐसी चीज़ें जोड़ दी गई हैं ताकि नकली नोट बनाना आसान न रहे। इनका ज़िक्र आगे किया गया है। आजकल के कुछ नोट देखो:

आशी, चौथी

तरुण-बबलेश, होशंगाबाद, म.प्र.

अधिकार, पहचान व राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक

यह तो सभी जानते-समझते हैं कि नोटों पर जो भी चिन्ह नज़र आते हैं, वे देश के सामाजिक व सांस्कृतिक प्रतीक होते हैं। इसीलिए भारत में जब अँग्रेज़ों का राज़ था तब नोटों पर इंग्लैण्ड के राजा-रानी की तस्वीर छपती थी। उस वक्त नोट का डिज़ाइन व छपाई देश के बाहर ही होती थी। आज भी लगभग 112 देशों के नोटों की डिज़ाइन और छपाई का काम जर्मनी, इंग्लैण्ड या कुछ और युरोपीय देशों में होता है।

ब्रिटिश काल के दो नोट

दो रुपए आठ आना

एक रुपया

जब देश स्वतंत्र हो गया तो नोटों पर ब्रिटेन के राजा की तस्वीर की जगह स्वतंत्र भारत के जाने-माने चिन्ह या प्रतीक शामिल करना ज़रूरी हो गया। इरादा था महात्मा गाँधी का चित्र छापने का। पर अन्त में सरकार ने अशोक स्तम्भ के त्रिमुखी सिंह को चुन लिया।

सरकार ने देश के प्रसिद्ध व दर्शनीय स्थानों की तस्वीरें छापना भी शुरू किया ताकि देश की पहचान बने।

पाँच हज़ार रुपए, गेटवे ऑफ इण्डिया

एक हज़ार रुपए, तंजावूर मन्दिर

1. किसी को भी लग सकता है कि जाने क्यों नोट में इतनी सारी खाली जगह छोड़ रखी है। असल में यहाँ गाँधी जी का जल चिन्ह या वॉटरमार्क है। इसे देखने के लिए नोट को उठाकर रोशनी में देखो। गाँधी जी की तस्वीर दिखेगी। महात्मा गाँधी सीरीज़ में गाँधी जी का वॉटरमार्क होता है।

8. महात्मा गाँधी की तस्वीर तथा खड़ी पट्टी के बीच महीन छपाई होती है। 10 रुपए के नोट में यहाँ "RBI" लिखा होता है। 20 और अधिक मूल्य के नोट में इसका मूल्य लिखा रहता है। लेंस की मदद से इसे देखा जा सकता है।

ताकि न बन सकें नकली नोट

1000 रुपए का नोट

नोट की डिज़ाइन बनाते वक्त इसका खास ख्याल रखा जाता है कि कहीं लोग नोटों की नकल न करने लगें। इसके लिए काफी सावधानियाँ बरती गई हैं। जैसेः

2. वॉटरमार्क के बगल में छोटा-सा फूल बना होता है। यह नोट के दोनों तरफ छपा होता है। रोशनी की तरफ उठाकर देखने पर पूरा का पूरा फूल और इसके बीच में लिखा 1000 साफ नज़र आता है।

3. उभरा हुआ यह निशान खास तौर पर नेत्रहीनों को नोट पहचानने में मदद करता है। 5 और 10 रुपए को छोड़कर बाकी सभी नोटों में इस जगह पर एक खास आकृति होती है। 20 रुपए में खड़ा आयत, 50 रुपए में चौकोर, 100 रुपए में त्रिकोण, 500 रुपए में वृत्त, 1000 रुपए में समचतुर्भुज या डायमण्ड।

4. 20, 50, 100, 500 तथा 1000 रुपए के नोटों में महात्मा गाँधी की तस्वीर, रिज़र्व बैंक की गारंटी, बाईं ओर का अशोक स्तम्भ चिन्ह और रिज़र्व बैंक अध्यक्ष के हस्ताक्षर उभरे हुए से होते हैं। यह एक बहुत ही खास तरह की इंटेलेगो छपाई के कारण होते हैं।

6. 10 से 1000 तक के सभी नोटों में एक सुरक्षा लकीर होती है। 10, 20 और 50 रुपए के नोट में यह लकीर पूरी तरह से नोट के भीतर रहती है। जबकि 100, 500 तथा 1000 रुपए में यह लकीर कुछ जगहों पर बाहर निकली हुई है। 1000 रुपए के नोट में इस लकीर पर देवनागरी लिपि में "भारत" तथा अँग्रेज़ी में "1000" व "RBI" लिखा होता है। बाकी नोटों में अंक (नोट का मूल्य) नहीं होता है। नोट को रोशनी में देखने पर पूरी लकीर नज़र आती है।

7. इस पट्टी पर एक चिन्ह छिपा होता है। 20, 50, 100, 500 व 1000 रुपए के नोट में यह चिन्ह नोट के मूल्य को दर्शाने वाला अंक होता है। अंक तभी नज़र आता है जब नोट पर प्रकाश 45^0 के कोण में पड़ता है।

5. नोट के ऊपर (दाहिनी ओर) व नीचे (बाईं ओर) दिए अंक फ्लोरोसेंट स्याही में छपे होते हैं। नोट का कागज़ बनाते समय ही उसमें ऑप्टिकल फाइबर, वॉटर मार्क जैसी चीज़ें डाली जाती हैं। नोट को पराबैंगनी प्रकाश में देखने पर उसका नम्बर व फाइबर दोनों साफ नज़र आते हैं।

मैले-कुचैले, कटे-फटे नोट

मैले-कुचैले, कटे-फटे नोटों को बैंक में बदला जा सकता है। नोट के चाहे दो टुकड़े हो गए हों उन्हें भी बदला जा सकता है। हाँ, ज़रूरी है कि दोनों कोनों के नम्बर न कटे हों। पर मान लो तुम्हारा नोट बहुत ही जर्जर है, उसके महत्वपूर्ण हिस्से गायब हैं तो? तो भी उसे बदला जा सकता है पर उसका पूरा मूल्य नहीं मिलेगा। मूल्य रिज़र्व बैंक के नियमों के अनुसार तय होता है। नोट के महत्वपूर्ण हिस्से हैंः नोट लागू करने वाले अधिकारी का नाम, बैंक की गारंटी व वादा, हस्ताक्षर, अशोक स्तम्भ का चिन्ह, महात्मा गाँधी की तस्वीर तथा वॉटरमार्क।

साभारः RBI की वेबसाइट